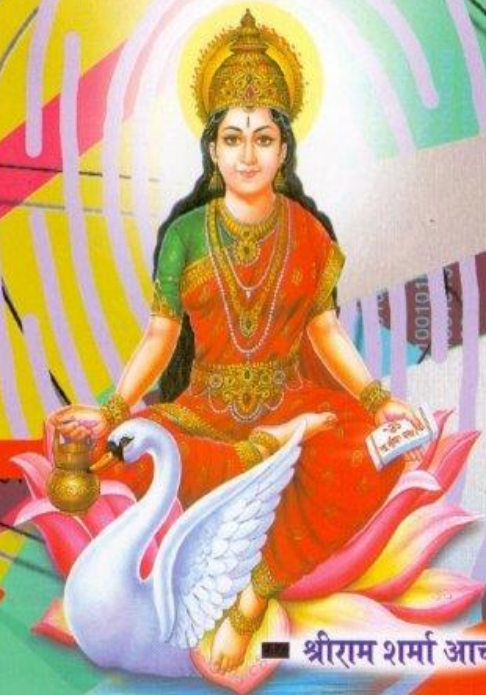


गायत्री

से

संकट निवारण



■ श्रीराम शर्मा आचार्य

गायत्री से संकट-निवारण

लेखक :

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१३

मूल्य : ६.०० रुपये

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

लेखक :

श्रीराम शर्मा आचार्य

पुनरावृत्ति सन् २०१३

मुद्रक :

युग निर्माण योजना प्रेस,
गायत्री तपोभूमि, मथुरा

गायत्री द्वारा संकट-निवारण

परमाद्या, परांबा, श्री गायत्री की साधना बड़ी चमत्कारी और सर्वोपरि साधना है। इसके द्वारा मनुष्य को साधारणतः लौकिक और पारलौकिक लाभ तो प्राप्त होते ही हैं, और अनेक मनोकामनाओं की पूर्ति भी होती है; पर अनेक समय इसके प्रभाव से मनुष्य की इस प्रकार रक्षा हो जाती है कि उसे दैवी चमत्कार के सिवाय और कुछ नहीं कहा जा सकता। कारण यही है कि इस साधना के कारण साधक में कुछ दैवी तत्त्वों का भी विकास हो जाता है जो ऐसी आकस्मिक आवश्यकता अथवा संकट के समय अदृश्य रूप से उसके सहायक बनते हैं। प्रायः यह भी देखा गया है कि जो व्यक्ति साधना करके अपने मन और अंतर को शुद्ध तथा निर्मल बना लेते हैं और ईर्ष्या-द्वेष के भावों को त्याग कर दूसरों के प्रति कल्याण की भावना रखते हैं, उनकी रक्षा दैवी शक्तियाँ स्वयं भी करती हैं। इस पुस्तक में अनेक गायत्री उपासकों के जो अनुभव दिए गए हैं उनसे यह भली प्रकार प्रमाणित होता है कि जिन लोगों ने गायत्री माता के आदेशानुसार आत्मशुद्धि और जगत के मंगल की भावना को अपना लिया है, उनकी रक्षा बड़ी-बड़ी आपत्तियों से भी सहज में हो जाती है।

श्री मदनगणेश रामदेव, पूना से लिखते हैं—मेरे गाँव से तीन कोस (९.६६ किमी.) की दूरी पर श्री सुन्दरा देवी का स्थान है। यह हमारे प्रांत का सुप्रसिद्ध स्थान है। मैं इसे गायत्री माता का ही रूप मानता हूँ। एक दिन मैंने दर्शन करने का निश्चय लिया। वर्षा ऋतु थी। जिस दिन प्रातः जाने का विचार निश्चित था उसके रात में ही काफी वर्षा हुई थी, अतः हमारे साथ जाने वालों में से सभी ने, पहाड़ की चढ़ाई और फिसलन के भय से अपना निश्चय बदल लिया। मैंने उस दिन दर्शन करने का अविचल संकल्प कर लिया था। अतः मैं प्रातः ही जाने की सारी तैयारी करके माता के चरणों में प्रणाम कर गायत्री जपते हुए चल

पड़ा। गाँव के अनेकों व्यक्तियों ने वर्षा के समय जल की धारा में बह जाने तथा पहाड़ से फिसल गिरने का भय, जो कि वास्तविक ही था, मुझे दिखाया, पर मैंने अपने मातृदर्शन का निश्चय बदलना अनुचित समझा और प्रस्थान कर ही दिया। सभी खिसक गए पर मेरे साले (पत्नी के भाई) ने बड़े ही साहस और प्रेम से मेरा साथ दिया। तीन माईल (४.८३ किमी.) चलने के उपरांत शेष तीन माईल पहाड़ की ही चढ़ाई चढ़नी पड़ती है। पहाड़ पर चढ़ने के प्रथम एक सरिता की धारा को पार करना पड़ता है, यह धारा कभी सूखती नहीं। इस नदी में वर्षा के जल से सहसा ही वेग से बाढ़ आती है और पार होने वालों को बहा ले जाती है। हम दोनों ने भोजनादि के सामान, वस्त्र एवं पूजा, स्वाध्याय की वस्तु सिर पर रखीं और नदी में उतर पड़े। नदी का लगभग अधिकांश भाग पार कर चुके कि सहसा ही भयंकर वेग से नदी में बाढ़ आई। हम दोनों माता का स्मरण करते हुए किसी भाँति किनारे पर आ गए। उलट कर देखा तो चार पुरुष उस भयंकर प्रवाह में बहते हुए जा रहे थे, जिन्हें अपना प्राण देकर भी बचाने का उपाय नहीं था।

माता की कृपा से इस मृत्युधारा से हम दोनों ऊपर निकल आए। अब आगे दो पहाड़ों के मध्य से होकर जाने का पथ था। हम लोगों ने आगे चलने के लिए सोचा और पहाड़ के ऊपर दृष्टि दौड़ाई। देखा तुरंत ही घनघोर बादलों से घिरकर पहाड़, रात से भी अधिक श्याम बन गया और मूसलाधार वर्षा होकर फिर आकाश स्वच्छ हो गया। कुछ ही देर फिर बादलों के दल, वही घनघोर कालिमा और पुनः प्रकाश का आगमन। यह क्रम वहाँ निरंतर चल रहा था। देखकर एक बार चित्त काँप उठा पर माता की सहायता की याद आते ही फिर साहस से भर उठा और आगे की ओर चल दिए। वर्षा के कारण भयंकर आवाज के साथ पहाड़ के शिखरों से अनेकों धारा बहती चली जाती हैं। हमने ऐसी भयावह स्थिति देखने की तो कोई बात ही नहीं, कल्पना भी अपने जीवन में नहीं की थी। माता की कृपा की आशा से ही आगे बढ़ते जा

रहे थे। कुछ दूर जाने के बाद देखा कि आगे मंदिर तक जाने के लिए अत्यधिक वर्षा के कारण कोई भी रास्ता नहीं रह गया था। फिर पीछे की ओर देखा तो अब लौटने का भी उपाय नहीं था। तब हम दोनों ने भी निश्चय किया कि यदि हमें मरना ही बदा है तो माता के दर्शनों के लिए चलते हुए ही हम प्रसन्न हृदय से मौत का भी आलिंगन कर लेंगे पर दर्शन किए बिना हरगिज नहीं लौटेंगे। गायत्री जप करते हुए हम रास्ते से ५० गज ऊपर चढ़ते हुए ही चलने लगे। कभी-कभी ऊपर की जलधारा सीधे हमारे सिर पर गिरती थी। उस समय हृदय में माँ की याद लिए साहसपूर्वक पत्थर पकड़ते हुए हम पार कर जाते थे। माता की कृपा से उस समय हमारे हृदयों में इतना उत्साह उमड़ा पड़ता था कि इससे चौगुने संकट का भी हम लोग सामना करने में जरा भी नहीं घबराते वरन और भी हमारा साहस एवं उत्साह बढ़ जाता।

अब एक मील (१.६१ किमी.) की दूरी रह गयी थी। वारिश भी क्रमशः हलकी होती जा रही थी। कुछ दूर बढ़ने पर देखा कि एक भयंकर पहाड़ी सर्प दौड़ता हुआ हमारी ओर ही आ रहा था। हम लोग कहाँ भागते, खड़े रहे, वह दौड़ता आया और हमें कुछ भी क्षति पहुँचाए बिना नजदीक से ही निकल गया। अब हम मंदिर में पहुँच चुके थे। मंदिर के पुजारी जी ने हम लोगों के इस समय पहुँचने की बात असंभव मानकर अत्यंत आश्चर्य किया और हम लोगों को तब आश्चर्य हुआ जब कि हमने मंदिर पहुँचकर देखा कि सिवाय ऊपरी वस्त्र के, उसमें बँधी पूजा सामग्री, भोजन का सामान (आटा आदि) तथा पुस्तकें, संपूर्ण की संपूर्ण सूखी ही थीं।

वर्षा बंद हो जाने पर हम निर्विघ्नरूपेण घर वापस लौटे।

श्री बैजनाथ प्रसाद सौनकिया, दिगौड़ा से लिखते हैं—पूज्य आचार्य जी ने मुझे चैत्र नवरात्रि में गायत्री तपोभूमि मथुरा आने का अनुग्रह प्रसाद दिया था, पर मैं प्रारब्धवश उत्पन्न परिस्थिति को लांघकर वहाँ नहीं जा सका। फिर भी गायत्री माता की अज्ञात प्रेरणा से हम चौदह

उपासकों ने मिलकर दिगौड़ा के जगदंबा मंदिर में चौबीस हजार मंत्र जपने का संकल्प प्रत्येक ने लिया और निष्ठा सहित जप करने लगे। प्रतिदिन उस मंदिर में बैठकर अपना-अपना जप पूरा कर सभी घर जाते।

३१ मार्च (१९५५) को जप करने के उपरांत मैं घर आया तो दोपहर हो गया था। धूप तीखी हो रही थी। मैंने शीघ्रता के विचार से उस दिन केवल चावल पका लेने का ही निश्चय किया, रसोईघर में बैठ चूल्हा जलाया और चावल सिद्ध होने के बाद मैंने सोचा कि केवल भात कैसे खाया जाएगा, अतः अंदर से थोड़ा गुड़ ले आना चाहिए। मेरे बगल में ही लालटेन रखा हुआ था। मैंने लैम्प जलाया और उसे लेकर गुड़ लेने चला। उस समय मुझे इसकी जरा भी सुध नहीं थी कि यह दोपहर है और इस समय लैम्प जलाने में आश्चर्य तो यह कि उस घर में जाते और आते समय मैंने अब तक कभी रात में भी प्रकाश का सहारा नहीं लिया, और आज दिन को लैम्प जलाकर, गुड़ लाने जा रहा था। जब गुड़ वाले घर के देहली पर गया तो देखा कि उसके प्रवेश द्वार पर एक सर्प बैठा है, जैसे किसी की प्रतीक्षा कर रहा हो। मैंने जैसे ही सर्प को घर के दरवाजे पर बैठा हुआ देखा कि मुझे अचानक ही दिन को लैम्प जलाना और गायत्री माता की कृपा का एक साथ ही ज्ञान हुआ और सर्प को देखकर भागने के स्थान में मैं ठठाकर हँस पड़ा और उल्लास में भरकर ताली पीटने लगा। सर्प महाराज पता नहीं किधर भाग गए।

उस दिन स्थानीय सभी उपासकों ने मिलकर एक सभा का आयोजन किया और उस सभा में गायत्री माता का गुणगान किया गया।

मैं यह सदैव सोचा करता हूँ कि यदि गायत्री माता की कृपा से मैंने दोपहर में लैम्प जलाने की मूर्खता न की होती, तो आज मैं अकाल मृत्युग्रस्त होकर किसी अन्य ही लोक का भोग कर रहा होता।

श्री शिवशंकर शर्मा, कामठी से लिखते हैं—माता की कृपा की अनेक घटनाएँ मेरे जीवन में अवश्य घटीं, पर सबसे आश्चर्यकारी

चमत्कारी यही घटना है जिसमें मेरे प्राण बचा लिए गए। सर्प दंशन से बच जाना, वृक्ष गिरते समय उससे बच निकलना और इंजन से कटते-कटते बच जाना, ये भी मेरे जीवन में आश्चर्य घटना ही हैं, पर मुझे सब से अधिक आश्चर्य और माता की साक्षात् करुणा निम्न घटना में दीख पड़ती है।

उस दिन बंगले से लौटा आ रहा था, सहसा ही पथ में जोरों का तूफान आया। घोर अंधकार छा गया। मैं साइकिल लेकर आगे बढ़ता ही गया। रास्ते में पलटनों की छावनी पड़ती थी, मैं संतरी की ओर बढ़ता जा रहा था। उसने कई बार आवाजें भी दीं पर मैं सुन न सका। कुछ निकट जाने पर देखा संतरी मेरी ओर बंदूक सीधा किए खड़ा है। मैं देखते ही हठात रुका और कहा—मैं तो यहीं का ठेकेदार हूँ। संतरी ने कहा कि अब तो हमने भी तुम्हें पहचान लिया है, पर जिस समय उस तूफान में कई बार आवाज देने पर भी तुम नहीं रुके, उस समय मैंने सरकारी अनुशासन के अनुसार दो बार तुम्हारे ऊपर बंदूक चलाई, आश्चर्य कि दोनों बार घोड़ा दबाने पर भी गोली न छूटी। तुम्हारे सौभाग्य ने तुम्हारा प्राण बचा लिया। माता की याद करते ही मेरा हृदय गद्गद् हो उठा और वहाँ से अश्रु पुष्प मातृ चरणों पर चढ़ाता हुआ घर आया।

श्री दत्तात्रेय पुरुषोत्तम हरदास ए.एम.आई.टी. इटारसी से लिखते हैं—उपनयन संस्कार के थोड़े ही दिन बाद मैंने उपासना को व्यर्थ की भावुकता तथा अनर्थक-पुरुषार्थ समझकर त्याग दिया। कुछ दिन उपरांत मैंने 'प्राचीन भारत में शिक्षा की प्रणाली' एक अँगरेजी पुस्तक पढ़ी और उसने मुझे गायत्री उपासना में प्रवृत्त कर दिया। फिर पू. आचार्य श्रीराम शर्मा लिखित गायत्री महाविज्ञानादि ग्रंथ पढ़कर तो मैं इसका अनुरक्त बन गया।

मैं सरकारी कर्मचारी हूँ। मेरे कुछ इर्ष्यालु साथियों ने मुझे स्थान-च्युत या स्थानांतरित करने के लिए षड्यंत्र रचा। हमारे उच्चाधिकारियों के पास मेरी झूठ-मूठ की बनी-बनाई अनेकों शिकायतें लिख भेजीं।

उसी समय मेरी पारिवारिक स्थिति भी संकटपूर्ण हो गई। बारिश के दिन थे। बच्चे सभी मोतीझरा से आक्रांत थे। मुझे जरा भी चैन नहीं था। चिंता से जर्जर हो रहा था। एक दिन अत्यंत पीड़ित होकर माता से विनय किया—“माँ! मुझे इन संकटों से अब उबार ले।” उसी रात स्वप्न में एक दिव्य स्त्री के रूप में माता का दर्शन हुआ, मुझे कहा—“तुम्हारा स्थानांतर रुक जाएगा, चिंता छोड़ दो।”

आश्विन—नवरात्रि का अवसर आया। मैं अनुष्ठान में संलग्न हो गया। उसी बीच सहसा उच्च अधिकारी का आदेश पत्र मिला—जिसमें मेरा स्थानांतर लिखा था। मैं हतप्रभ हो गया। सोचने लगा—क्या वह स्वप्न मेरी कल्पना था?

पुनः उसी रात में दिव्य तेजोमयी माता ने स्वप्न में आश्वासन दिया, “घबड़ाओ नहीं, बदली तुम्हारी नहीं, तेरे विद्वेषियों की ही होगी।”

एक सप्ताह के बाद ही मेरे सारे ईर्ष्यालु मित्र, वहाँ से स्थानांतरित कर दिए गए और मैं आज भी उसी स्थान पर काम करता हुआ दिनानुदिन प्रकाश और आनंद का बढ़ता हुआ स्वरूप अपने में पा रहा हूँ।

श्री गोमतीबाई दुबे, दमोह से लिखती हैं—एक बार मैं रसोई बना रही थी। मेरे अनजाने में साड़ी में आग लग गई। आधी साड़ी जलने के बाद मुझे पता लगा—पर मेरे अंग के किसी भाग में जरा आँच न आई।

दूसरी बार मैं बाहर गृहकार्य में संलग्न थी। खाट पर छोटी बच्ची सो रही थी। रजाई का एक कोना नीचे लटक रहा था। सहसा घर की बड़ी बच्ची ने एक धधकते हुए अंगारे से भरे तसले को ले जाकर खाट के नीचे रख दिया और चली आई। रजाई का वह भाग तसले से सटा हुआ था, पर अग्नि के स्पर्श से जरा-सा ही अलग था। यह गायत्री माता की ही कृपा थी जो वह अबोध शिशु जलने से बच सकी।

हमारे पड़ोस के एक दंपति निस्संतान थे। अनेक उपाय किये जा चुके थे, पर कोई परिणाम नहीं हुआ। एक दिन वह नारी मर्माहत-हृदय लिए मेरे पास आई और अपनी सारी व्यथा कह सुनाई। मैंने माता का स्मरण कर गायत्री से अभिमंत्रित कर उसे जल पिला दिया और उसे भी जप करने के लिए निवेदन किया। आज वह संतानवती बन गई है। इस घटना से मैं स्वयं ही आनंद विभोर हूँ। अंतर देश में जो कुछ देख और पा रही हूँ—वह लिख नहीं सकती, केवल भाव दृष्टि देख-देख मुग्ध हो रही हूँ।

श्री मदनलाल जोशी, गंगधर से लिखते हैं—‘अखण्ड ज्योति’ ने मुझे, बिना किसी आवश्यकता के—खींचकर गायत्री उपासना में प्रवृत्त कर दिया और शायद यह अकारण ही दया करने वाली माता की अपार करुणा थी, जिसके कारण मैं भविष्य में आने वाले अटल संकट से निस्तार पा सका।

दुर्भाग्यपूर्ण प्रारब्ध के कारण मेरे दुश्मनों ने पुलिस को पक्ष में कर लिया और मेरे ऊपर ऐसे अभियोग लगाए, कि जिसकी सफलता होने में मेरा सर्वनाश उपस्थित था। एक सप्ताह के अंदर मुकदमों की जटिलता इतनी बढ़ गई कि मैं दुश्चिन्ता के कारण सो नहीं सकता था। रुपयों तथा उच्च पद स्थित साथियों की सहायता लेने का विचार मन में उत्पन्न हुआ, पर उसी समय अंतर में एक आवाज आई—“अपना हित चाहते हो तो सारे भरोसों को छोड़कर गायत्री उपासना करो।” उसी दिन मैंने विधिपूर्वक उपासना प्रारंभ कर दी। इस सप्ताह में मुझे चिन्ता से नींद नहीं आती थी, पर उपासना करने की रात्रि में इतनी निश्चितता का बोध हुआ कि मैं सूर्योदय तक बेखबर पड़ा रहा। कलक्टर साहब से मिलने की प्रेरणा हुई। जाकर मिला।

माता के अनुग्रह से, उन विद्वेषियों को पाँच-पाँच सौ रुपये का मुचलका देना पड़ा। हथकड़ियों पहननी पड़ी। इतने पर भी उन लोगों के अंतर की द्वेषाग्नि शांत नहीं हुई थी, उन लोगों ने पाँच, सात गुंडों को

रुपये का प्रलोभन देकर अप्रगट रूप से मुझे सताने की योजना बनाई। मेरा अनुष्ठान चल ही रहा था कि कुछ दिन बाद मुकदमे में मेरी शानदार विजय हुई। उसी समय मुझे बदल कर गंगधर आ जाना पड़ा। मन में आया, इस परदेश में शायद गुंडों को मेरे ऊपर आघात करने का अनुकूल अवसर न मिल जाए? पर माता की कृपा! एक गुंडे की माताजी बीमार पड़ गई, उसके रुपये उसी में खरच होने लगे। दो गुंडों को मारपीट केस में सजा हो गई और शेष यों ही ठंडे हो गए।

आप सोच सकते हैं कि यदि मैंने गायत्री उपासना का आश्रय न लिया होता तो आज मैं जेल में पड़ कर सड़ता रहता और जीविका के भी लाले पड़ जाते। माता की असीम कृपा से सारी उलझनों से बाहर निकल कर आज हम निर्द्वंद्व भाव से अपना काम करते हुए जीवन-यापन कर रहे हैं।

श्री ए.पी. श्रीवास्तव, गार्ड, सी. रेलवे, दमोह स्टेशन से लिखते हैं—मैं एक मालगाड़ी का गार्ड था। दमोह जंक्शन से कटनी जंक्शन तक मेरे ऊपर संरक्षण का उत्तरदायित्व था। एक बार लगभग साढ़े सात बजे रात में सलैया स्टेशन पर एक डिब्बे से चोरों ने चोरी कर ली। मैंने उसी समय, ये बातें सभी को जता दीं, तार भी कर दिया। फिर भी छह महीने उपरांत हमारे विभाग वालों ने मुझे 'गार्ड' पद से च्युत कर नंबर टेकर बनाने का प्रयत्न किया। पुलिस विभाग वालों ने झूठा लांछन लगाने का षड्यंत्र किया, पर उन सबों की सारी चेष्टाएँ व्यर्थ हो गईं। मैंने अपने भाई शारदाकांत के कहने तथा बीना ड्राइवर भगवती दीन जी जो एक अनुभवी गायत्री उपासक हैं, के निर्देशानुसार, स्वयं गायत्री उपासना प्रारंभ कर दिया। थोड़े दिनों के उपरांत मैंने अपील की और माता की कृपा से ये संकट विनष्ट हो गए और जिन लोगों ने द्वेषवश, बिना अपराध के मुझे गड्ढे में ढकेलने का प्रयत्न किया था, वे स्वयं ही दंडित होकर अपना फल भुगत रहे हैं। अब तो माता की कृपा से मेरे ऊपर आए संकट अनायास ही टल जाया करते हैं।

श्री श्रीराम, कोलसा, आजमगढ़ से लिखते हैं—यद्यपि हमने बहुतों से सुना था कि गायत्री महान शक्तिशाली मंत्र है, पर उसे जीवन में प्रत्यक्ष देखने का अवसर नहीं आया था। पर आगामी वर्षों से एक गायत्री उपासक श्री मन्लाल जी के साथ रहकर जो कुछ देखा और अनुभव कर सका, वह इसलिए छापने की इच्छा हुई कि यह पढ़कर यदि एक भी व्यक्ति गायत्री माता का आश्रय ग्रहण कर अपना कल्याण कर लेगा तो मैं अपने को कृतार्थ समझूँगा।

दानापुर के श्री रामदास धोबी की पत्नी को प्रेत लगता था। एक बार मेरे सामने एक व्याकुल आदमी मन्लाल जी को बुलाने आया। मैंने उस बुलाने वाले से उसकी छटपटी का कारण पूछा—उसने बताया कि वर्षों से रामदास की पत्नी को प्रेत लग रहा है। जब वह आता है तो इसके हाथ पैर ऐंठ से जाते हैं, आँखें उलट जाती हैं तथा शरीर मुरदे समान स्थिर और ठंडा हो जाता है। उत्सुकतावश मैं भी मन्लाल जी के साथ गया। इन्होंने जाकर गायत्री माता का ध्यान किया और उपरांत प्रार्थना की कि हे माता! इस गरीब दुखियारी के कष्ट हर ले। मैं पंद्रह दिन तक इसके लिए १० माला गायत्री महामंत्र का जप और अंत में उसका हवन करूँगा। उसकी प्रार्थना मात्र से वह औरत तुरंत ही अपनी स्वाभाविक दशा को प्राप्त हो गई और फिर उसे प्रेतावेश नहीं आया।

श्री शिवप्रसाद शुक्ल समदा, घुमनी से लिखते हैं—मैं प्रथम साधारण रूप से गायत्री उपासना कर लिया करता था। मैं प्रतिष्ठापूर्ण-स्थिति प्राप्त कर अपना सुखद-जीवन व्यतीत कर रहा था। सहसा ही एक व्यक्ति ने वह स्थान अधिकृत करने के लिए, मुझे उस स्थान से च्युत करने के लिए भयंकर षड्यंत्र किया। मैंने विचार किया—देखा, उसका षड्यंत्र सफल होकर मुझे प्रतिष्ठा और जीविका दोनों से वंचित कर देगा। ऐसा अनुभव करते ही मैं व्याकुल हो उठा पर अपनी यह अंतःव्यथा किससे कहता? चिंता से प्राण-मन आछन्न हो रहे थे। नींद

का कहीं पता नहीं था। ठीक मध्य निशा थी। सभी सो चुके थे। सोचा, इस महान संकट का निवारण, सिवाय गायत्री माता को छोड़कर और कौन करने वाला है? इतना सोचते ही मेरे आँखों से अश्रु धारा बह निकली। घंटों तक उस निस्तब्ध-निशा में माँ के आगे रोता रहा। हिचकियाँ बँध गईं। रोते हुए मुझे कब नींद आ गयी—कुछ याद न रहा। तुरंत देखता हूँ, मेरी माता जो स्वर्गीया हो चुकी हैं, मेरे सामने खड़ी होकर कह रही हैं—“बेटा! चिंता क्यों कर रहे हो? दुःख छोड़ो और यह माला लो। सवालक्ष गायत्री जपने से तेरे संकट स्वतः ही निवृत्त हो जाएँगे।”

तुरंत ही आँखें खुलीं। देखा—कहीं कोई नहीं था। ब्राह्मी मुहूर्त उपस्थित था। मैंने समझ लिया कि माता के रूप में स्वयं गायत्री माता ही थीं। और मैं उठकर आदेश पालन की तैयारी में लग गया।

सवालक्ष का दो अनुष्ठान किया। एक बार पुनीत सरयू नदी के तट पर बैठकर भगवान राम की जन्मभूमि अयोध्या में और दूसरी बार ऋषि-मुनि सेवित, पुण्य सलिला भागीरथी के पावन पुलिन पर स्थिर होकर ऋषिकेश में और मेरी प्रतिष्ठा एवं अन्य स्थितियाँ पूर्व के रूप में रहते हुए ही उज्वल और गहरी हो गई हैं। षड्यंत्रकारी महोदय अपना दिवस—‘नहिं दरिद्र सम दुःख जग माहीं।’ का अनुभव लेते हुए काट रहे हैं।

श्री अंबाराम पंढरीसा, भावसार से लिखते हैं—शुक्रवार ता. ८-४-५५ के दोपहर की घटना है। ‘श्री गायत्री आश्रम, खंडवा’ का साइनबोर्ड फ्रेम निर्माणकर्ता की दुकान से लाने जा रहा था। दुकान समीप थी। मैं गायत्री स्मरण में आनंदमग्न होता सा जा रहा था। वहाँ, एक मदोन्मत्त साँड़, जो बिना अपराध के ही सामने वालों को अपनी झोंक में, सींग से उठाकर फेंक देने का अभ्यासी था, मेरे पीछे जोरों से दौड़ता हुआ आया और मेरी पीठ में सींग लगाया। किंतु न जाने माँ गायत्री ने उसके अंतर में कौनसी प्रेरणा दी कि मेरे शरीर का स्पर्श

करते ही वह पीछे हट गया और मुझे छोड़, मेरी बगल से आगे आकर एक साइकिल वाले को जोरों से ठोकर दे दिया। उस बिचारे को चोट तो लगी किंतु कोई विशेष खतरा नहीं हुआ।

यह घटना क्षणमात्र में ही हो गई। मैं सोचता हूँ, यदि उस समय मैं गायत्री का स्मरण नहीं कर रहा होता, तो वह उन्मत्त साँड़ मेरा कचूमर निकाल देता और मैं किसी अन्य ही लोक का वासी हो गया होता।

आज माता के प्रति मेरा हृदय कृतज्ञता से भरा हुआ है, सोचता हूँ मैं अब इस जीवन को गायत्री माता की सेवा में समर्पित कर सकूँ तो मेरे और शायद सबों के लिए बड़ा ही कल्याणकारी सिद्ध हो।

श्री शिवशंकर शर्मा, शिवपुरी से लिखते हैं—लगभग दो वर्ष हुए, मुझे 'अखण्ड ज्योति' पढ़ने को मिली। उससे प्रभावित होकर मैं अखण्ड ज्योति का ग्राहक बना। आचार्य जी से अपने जीवन को सफल बनाने का मार्ग पूछा। उन्होंने श्रद्धापूर्वक गायत्री उपासना करने का आदेश दिया। मैंने तदनुसार माता की उपासना आरंभ कर दी। माता की कृपा से मेरे स्वभाव एवं विचारों में सात्त्विकता का संचार हुआ और मन में अत्यधिक शांति उत्पन्न हुई। छबड़ा निवासी श्री मेरूलाल जी की पत्नी गंगाबाई को भूत बाधा सताया करती थी। उसने मुझसे कहा। मैंने आचार्य जी का नाम ले गायत्री महामंत्र से उसे झाड़ा लगाया और मंत्र से अभिमंत्रित जल पिलाया। इस प्रकार गायत्री माता की महान अनुकंपा से उसको भूत बाधा से छुटकारा मिल गया। एक दिन अचानक श्री कल्याण प्रसाद की धर्मपत्नी फूल कुंवारी को भूत का सामना करना पड़ा जिससे वह बेहोश हो गई। मैं पहुँचा और उसको गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित जल पिलाया एवं उसी से झाड़ा लगाया। कुछ मिनटों के बाद वह पूर्ण स्वस्थ हो गई। माता की उपासना का ऐसा ही फल होता है।

श्री जगदीश स्वामी कटनी से लिखते हैं—लगभग दो वर्ष हुए मुझे 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका पढ़ने को मिली। मैं इस पत्रिका से ऐसा

प्रभावित हुआ कि इसका ग्राहक बन गया। मैंने परम पूज्य आचार्य जी द्वारा बताए हुए नियमानुसार गायत्री उपासना प्रारंभ कर दी। प्रारंभ में मन नहीं लगता था, अब उन्हीं की कृपा से स्थिरता बढ़ रही है। दैवयोग से आपस में कुछ कलह हो जाने से मुझे दो मुकदमों में फँसना पड़ा। कुछ महीनों के बाद मुकदमे समाप्त हुए और फैसले में असफलता मेरे भाग में आई। मैं दुखी रहने लगा। मैंने गुरुदेव को पत्र लिखा और संकट निवृत्ति के लिए प्रार्थना की। उन्होंने अधिक श्रद्धा एवं विश्वास के साथ गायत्री साधना में लग जाने को कहा। मैंने तदनुसार संकल्प सहित उपासना बढ़ा दी। माता की कृपा से मुझमें साहस बढ़ा। प्रेरणावश मुकदमों की अपील कर दी। कुछ माह बाद तारीख पड़ी। मुकदमे नए सिरे से चलाए गए। सचाई प्रगट हो गई और अंत में मुझे सफलता प्राप्त हुई।

श्री नंदकिशोर तिवारी, धवोली (सागर) लिखते हैं—तपोभूमि के महायज्ञ की पूर्णाहुति करके घर लौट रहा था। मेरे गुरुवर गायत्री के परम उपासक श्री परमानंद मिश्र जी साथ ही थे। बीना स्टेशन पर उतरकर वे प्लेटफार्म पर बैठकर संध्या करने लगे, मैं उसी जगह खड़ा रहा। उसी समय एक ठेले पर चार बारूद की पेटी ट्रेन से उतारकर कुली लिए आ रहा था। सहसा एक पेटी फूट गई और स्टेशन में आग लग गई। गुरुदेव के निकट ही छः व्यक्ति अत्यधिक जल गए जिनमें तीन अस्पताल में जाकर मर गए। मेरे सारे वस्त्र और शिखा तक जल गए—शरीर में दो जगह थोड़े-थोड़े जलने के निशान बन गए, पर मेरे गुरुदेव को जरा सी आँच भी न आई, उनके निकट के अन्य काफी जल गए। मैं खड़ा होकर माता की संरक्षण लीला आँखें फाड़कर देख रहा था।

श्री भगवान सिंह (एककलवारा) मनावर (धार), अपना अनुभव लिखते हैं—मैंने अब तक करीब साढ़े पंद्रह लाख गायत्री मंत्र जप किया है। इससे मैं दानव से मानव बन गया हूँ। और दरिद्रता तथा

अजीर्णता की बीमारी से मुक्त हुआ हूँ। ३० अक्टूबर १९५६ को मैं अपने मकान के ऊपरी छत पर बैठकर भोजन कर रहा था। अचानक मकान के नीचे का खंभा टूट जाने से सारा मकान गिर गया। मैं भी उसके साथ ही ऊपर से नीचे गिरा। दीवारें गिरीं, चाँदनी के पत्तरे गिरे, पाट-खपड़ें आदि सब ही मेरे ऊपर गिरे, पर न तो मुझे कुछ चोट आई और न कुछ लगा ही। गाँव के लोग दौड़े आए और मुझे सुरक्षित देखकर सभी गायत्री माता की जय-जयकार करने लगे।

श्री शिवशंकर मिश्रा, कामठी, नागपुर से लिखते हैं—कुछ समय पहले की बात है कि मेरे मामा सख्त बीमार हो गए और कई महीने रुग्णावस्था में रहकर स्वर्गवासी हुए। मृत्यु होने के करीब २० दिन पहले डॉक्टर ने उनको नागपुर ले जाकर परीक्षा कराने की राय दी। इसके लिए अस्पताल की बीमारों को ले जाने वाली मोटर का प्रबंध एक दिन पहले ही कर लिया गया। मामा ने मुझे बुलाकर कहा कि तुम्हें मेरे साथ चलना है सो देर न लगाना, मोटर सुबह ठीक सात बजे आ जाएगी। मैं चलने को कहकर घर आकर सो गया। मुझे स्वप्न में यह मालूम हुआ कि कल मोटर दुर्घटना होगी। परंतु उस पर ज्यादा ध्यान न देकर मैंने यह समझा कि कहीं से दुर्घटना का समाचार सुनने में आएगा। मैं सुबह यथासंभव जल्दी उठा और नित्य नियम के अनुसार गायत्री जप का हवन करने लगा। इतने में मोटर नागपुर से आ गई। दो बार मामा का लड़का बुलाने आया कि मामा और ड्राइवर जल्दी कर रहे हैं। घर के लोग भी नाराज हो रहे थे कि इस समय पूजा लेकर बैठ गए, जाते नहीं। पर मैंने निश्चय किया कि नित्य नियम पूरा करके जाऊँगा। इस कारण मैं कुछ देर में पहुँचा और मामा को लिटा कर नागपुर आया और वहाँ उनकी जाँच कराई। लौटते समय अस्पताल से कुछ दूरी पर फल लेने को उतरा। फिर मैं जब बैठने लगा कि मोटर चल दी और मैं धड़ाम से जमीन पर गिरा। वह ऐसी जगह थी कि जहाँ बड़ी तेज चढ़ाई थी। अगर मोटर जरा भी पीछे को सरकती तो मेरी

हड्डियाँ चूर-चूर कर देती और अगर आगे निकल जाती तो ऊपर से आते हुए सैकड़ों रिक्शे और ताँगे, मोटर आदि से दबकर मैं चटनी बन जाता। गिरने से मुझे चोट तो काफी लगी, पर लोगों ने उठाकर मोटर में लिटा दिया। घर पहुँचकर भी मुझसे स्वयं नहीं चला गया और लोगों ने ही घर में भीतर पहुँचाया। पंद्रह बीस दिन बाद मैं चलने फिरने लायक हुआ। गायत्री माता ने मुझसे पहले ही दुर्घटना की सूचना देकर सावधान किया और मेरे असावधानी करने पर भी मेरी प्राण-रक्षा की। यह उनकी अपार कृपा का प्रमाण है।

श्री भागीरथ जी हरदिया, कसरावद अपने अनुभव की घटना लिखते हैं—मेरे यहाँ भाई एवं बहन की शादी थी। मैं अपने दो साथियों के संग पानी की कोठी भरने के लिए कुएँ पर जा रहा था। मेरे साथ में मेरी बुआ का आठ वर्ष का लड़का भी था। एक पत्थर पर गाड़ी चढ़ जाने के कारण वह आठ, सात मन भारी कोठी उस बालक पर गिर पड़ी और बालक गिरकर चक्के के नीचे आ गया। उसके पेट पर से चक्का निकल गया। लड़के को वमन होने लगा और छटपटा कर कराहने लगा। मैं व्याकुल होकर माता की प्रार्थना कर रहा था। तुरंत बालक को डॉक्टर के यहाँ लेकर गया। डॉक्टर ने भली भाँति जाँचकर कहा—लड़का अब पूरा स्वस्थ है। सभी आश्चर्य में थे कि इतनी भारी गाड़ी का भार सहकर वह कैसे पूरा स्वस्थ रह सका! मैं विवाह अवसर पर इस महाविघ्न से बचा लेने के लिए माता को धन्यवाद दे रहा था।

अतर्रा (बांदा) से श्री रामसिंह जी लिखते हैं—मैं मोटर ठेला से इलाहाबाद होता हुआ कानपुर से अतर्रा आ रहा था। दुर्भाग्य से अतर्रा से २८ मील (लगभग ४५ किमी.) पर हमारा मोटर ठेला उलट गया। ठेले में १७० मन (लगभग ६५ टन) वजन भरा था। मोटर उलटने से ड्राइवर तो ५ मिनट के अंदर मर गया। दूसरे आदमी का पैर टूट गया। मुझे गायत्री माता ने बचाया। सिर में मामूली चोट आई। एक ही जगह बैठे हुए लोगों में से मेरा इस प्रकार बच जाना माता का अनुग्रह ही है।

श्री गंगाप्रसाद सिंह जी बरिया घाट (मिर्जापुर) से लिखते हैं—
 ता. ९ सितंबर १९ ५४ को दिन के ३ : ३० बजे वर्षा हो रही थी, घर में सब भाई भतीजे चारपाई पर बैठे थे। अचानक घर पर आकाश से भयंकर गड़गड़ाहट के साथ बिजली गिरी। औरतें जोर से रोने लगीं। मेरे मुँह से गायत्री माता की पुकार निकली। बिजली गिरने से छप्पर की खपरैल टूट गई, घर में धुआँ भर गया, बारूद की सी तेज गंध आ रही थी, दीवाल व नीचे की जमीन जहाँ लड़के बैठे थे बुरी तरह फट गई, मकान से सटा हुआ नीम का पेड़ जल गया। इतना सब होते हुए भी घर के किसी व्यक्ति को कोई क्षति न पहुँची। जहाँ सब लोग बैठे थे, ठीक उनके नीचे की जमीन का बिजली के भयंकर प्रहार से फटना और किसी का बाल भी बाँका न होना सभी दर्शकों के लिए एक आश्चर्य की बात थी। तब से हम लोगों को गायत्री माता पर अनेक गुनी श्रद्धा बढ़ गई है।

श्री देवीशंकर शुक्ल, श्यौपुर कलाँ लिखते हैं—अखण्ड ज्योति से संपर्क जोड़ने के बाद मैं गायत्री उपासना करने लगा था। मैं प्रतिदिन साइकिल पर एक पुल पार करते हुए पढ़ाने जाया करता था। वर्षा का मौसम था। पुल के बगल में जो मुड्डियाँ लगी हुई थीं, वह बरसात में टूट-फूट गई थीं। पुल के नीचे पत्थरों के ढेर थे। एक दिन वेतन लेकर वापस आ रहा था। अचानक पुल पर से साइकिल फिसली और अगला चक्का किनारे पर जाकर नीचे लटक गया। प्राण संकट के अवसर पर मैंने गायत्री माता का स्मरण किया और स्मरण करते ही मेरा एक पैर एक मुड्डी पर स्थिर हो गया और उसी क्षण एक हाथ से मैंने साइकिल का पिछला चक्का पकड़ लिया। इस भाँति साइकिल सहित मेरी रक्षा माता की कृपा से हो गई, नहीं तो दोनों के चकनाचूर होने में पल मात्र की देरी थी।

श्री पूरनमल जी गौतम, कोटा से लिखते हैं—मैं मोटर ड्राइवर हूँ। गत मास सांगोद जाते समय धानाहोड़ा गाँव के पास एक दुर्घटना हुई।

तीन औरतें आपस में ठठोली करती हुई सड़क पर चली जा रही थीं। जैसे ही मोटर बराबर आई कि एक औरत ने दूसरी को धक्का मारा जो मोटर के पहिये के बिलकुल आगे आ गई। मैंने बहुत बचाया मगर उसके मडगार्ड की ठोकर लग गई और वह पहिये के नीचे आ गई। मैंने सोचा कि पहिये के नीचे कुचली तो भी यदि पीछे के पहिये से बच जावे तो शायद इसकी जान बच जाए। माता का नाम लेकर गाड़ी तेजी से घुमाई। लारी बबूल के पेड़ से टकराई। मैं बुरी तरह घबरा रहा था कि औरत भी मरी गाड़ी भी टूटी। जब नीचे उतरा तो देखा कि वह औरत मोटर के नीचे से खुद ही निकल कर बाहर आ रही है। औरत के हाथ पैरों के जिन जेवरों पर होकर पहिया गुजरा था वे तो टूट गए पर उसको जरा भी चोट न आई। लारी में ठसाठस भरी हुई सवारियों में से भी किसी का बाल बाँका न हुआ। माता की इस कृपा को जितना धन्यवाद किया जाए, कम है।

दिगौड़ा (टीकमगढ़) से श्री गोविंद दास भार्गव सूचित करते हैं—श्री ब्रह्मचारी जी की प्रेरणा से ललितपुर जिला झांसी में एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ की पूर्णाहुति बड़े उत्साह पूर्वक हुई। पूर्णाहुति के उपरांत सभी नर-नारी अपने-अपने घर वापस जाने लगे। इसी बीच में अचानक एक कुत्ता हवनकुंड में आ गिरा। यह दुर्घटना देखकर सभी लोग परेशान थे। परंतु एक पंडित जी साहस पूर्वक हवनकुंड में सीढ़ी लगाकर घुस गए, तत्काल उन्होंने उस कुत्ते को बाहर निकाला। कुत्ता एवं पंडित जी पूर्ण सुरक्षित थे, यह दृश्य देखकर सभी लोग वेदमाता की दया का अनुभव करके प्रसन्नचित्त थे। वह कुत्ता आजकल ब्रह्मचारी जी के साथ ही रहता है। माता का ऐसा प्रत्यक्ष अनुभव देखकर सभी जनसमूह प्रभावित हुआ।

सुश्री प्रेमलता गुप्ता, मसूरी से माता के वात्सल्य का वर्णन करती हुई लिखती हैं—गायत्री उपासक श्री वानप्रस्थी जी मेरे संबंधी हैं। एक

बार उनके यहाँ आने पर उनके पास का गायत्री साहित्य मैंने खूब अध्ययन किया। गायत्री के प्रत्यक्ष चमत्कार पढ़कर गायत्री उपासना की इच्छा प्रबल हो उठी। तभी से उपासना करने लग गई।

हमारे निवास स्थान से जंगल लगा हुआ ही है। मैं जब जप करने बैठती तो एक पड़ोसी का कुत्ता भी आकर बैठ जाता और जप समाप्त होने पर चला जाता। एक दिन छत पर बैठ ब्राह्मी मुहूर्त में मैं जप कर रही थी। वह कुत्ता भी आकर बैठ गया। जंगल होने से जंगली जानवरों का भय सदा हमें लगा ही रहता है। उस दिन सहसा एक बघेरा आया और कुत्ते पर ताक लगा ही रहा था कि उसके मालिक ने उसे पुकारा और वह तुरंत भागा चला गया। उस बघेरे की दृष्टि बच्चे और मेरे ऊपर थी। मेरे तो प्राण सूख गए। मैंने माँ से प्रार्थना की—माँ तेरे सिवाय अब इस क्षण में रक्षा का कोई उपाय नहीं। ठीक दूसरे ही क्षण बघेरे ने हम लोगों पर एक बार दृष्टि डाली और कूदकर झाड़ी में छिप गया। माता के चरणों में, मैं निछावर हूँ।

श्री सुधाराम महाजन, बिलासपुर से लिखते हैं—गत मास कार्यवश रायपुर से कवर्धा जाने को बस में सवार हुआ। शायद भावी दुर्घटना की पूर्व सूचना मुझे अव्यक्त रूप से हो रही थी, इससे रायपुर के वेटिंग रूम में ही मैंने चालीसा के पाँच पाठ कर डाले। मोटर में भी मानसिक जप चल रहा था। लगभग १४ मील (लगभग २२ किमी.) निकल जाने पर अचानक मोटर का अगला चक्का टूटकर अलग जा गिरा। हमारी गाड़ी बगल के खड्डे की ओर बढ़ चली और सभी यात्रियों की आँखों के आगे अँधेरा छा गया। ड्राइवर ने कुशलता से ब्रेक लगाई और किसी भी यात्री को तनिक भी धक्का न लगते हुए गाड़ी सड़क के किनारे ऐसे रुक गई मानो किसी ने टेक लगाकर खड़ी कर दी हो। ईश्वर का नाम लेते हुए सभी यात्री उतर पड़े। लोग कह रहे थे कि गाड़ी में कोई नेक आदमी जरूर है, जिसके कारण सब बाल-बाल बच गए।

श्री ज.मा. गवली, थाना (बंबई) माता की कृपा का वर्णन करते हैं—नौकरी से घर वापस आ रहा था। स्टेशन पहुँचकर चलती ट्रेन पकड़ने की कोशिश की। हैंडल पकड़कर पायदान पर खड़ा ही हुआ था कि मेरे हाथ से हैंडल छूट गया और मैं गाड़ी के नीचे लुढ़क गया। पर पता नहीं कैसे मेरे गिरते ही गाड़ी सहसा रुक गई और मैं थोड़ी सी चोट मात्र खाकर बाल-बाल बच गया। लोग मेरे भाग्य की सराहना कर रहे थे और मैं प्राण रक्षिका अपनी इष्ट देवी गायत्री माता की याद में आँसू बहा रहा था।

श्री रामकिसन वडाले, मालेगांव (नासिक) लिखते हैं—गणेश उत्सव की तैयारी में मैं सीन बनाने में लगा हुआ था। एक बिजली का तार वहाँ नीचे लगा हुआ था। अचानक मेरे हाथ का पंजा उस तार पर जा पड़ा और चिपक गया। बिजली का करंट मेरे सारे शरीर में फैल गया और मेरे प्राणों को खींचने लगा। मेरे बड़े भाई और मित्रगण भी वहीं थे, पर कुछ नहीं कर सके। मेरा प्राण जाने ही वाला था—मैंने माता को व्याकुलता से याद किया। बोलने की सामर्थ्य थी ही नहीं। याद करते ही जिस होल्डर में से यह वायर आया हुआ था, वह होल्डर टूट कर नीचे गिर पड़ा और मेरे प्राण बच गए। ठीक उसी क्षण में होल्डर गिर पड़ना माता की साक्षात् कृपा नहीं तो क्या है !

डेरापुर (कानपुर) से श्री सतीशचंद्र लिखते हैं—इसी नवरात्रि में जबकि मेरा २४००० का अनुष्ठान चल रहा था, एक दिन मैं खेत में ट्रैक्टर चलाने गया और भूल से नेकर आदि न पहन कर धोती ही पहने रहा। न मालूम कैसे धोती का एक अंश साइलेंसर पर पहुँच गया और उसमें भयंकर आग लग गई। मुझे गरमी जान पड़ी पर मैं उस तरफ ध्यान न देकर खेत जोतता रहा। पर जब एकदम लौ उठी तो मैं घबरा कर चलते हुए ट्रैक्टर से कूदकर अलग खड़ा हो गया। उसी समय आग अपने आप बुझ गई। पर ट्रैक्टर चलता जा रहा था। मैं दौड़ा पर एक

झाँखर से टकराकर गिर पड़ा, जिससे बहुत से काँटे मेरे बदन में लग गए। पर इस ओर ध्यान न देकर मैं उठा और दौड़कर उसका स्विच बंद किया। कितनी भीषण दुर्घटना हो जाती यदि मैं ट्रेक्टर को रोक न पाता। दस हजार रुपये का ट्रेक्टर और मैं वहीं पर समाप्त हो जाते। माता ने हमें सब तरह से बचा लिया। मेरे शरीर पर पाँच-सात छालों के अतिरिक्त कोई हानि नहीं हुई।

श्री फूलवती शर्मा, देहरादून से लिखती हैं—मेरे मन में अनायास ही गायत्री उपासना के प्रति प्रेम उत्पन्न हुआ था और नित्य प्रेम से माता की आराधना किया करती थी। एक बार मेरे पतिदेव एक ऊँचे पहाड़ पर गए थे, चढ़ने का रास्ता संकीर्ण और खतरों से भरा था। सँभल-सँभल कर पग रखना पड़ता था, पर पता नहीं क्या होनहार था। सारी सावधानी के बरतते हुए भी आखिर इनके पैर फिसल ही गए। मीलों की ऊँचाई थी। शरीर के चकनाचूर हो जाने के सिवाय और कोई बात नहीं हो सकती थी, पर माता को अपनी बेटा का सौभाग्य सिंदूर जो बचाना था। थोड़ी दूर तक गिरने पर वे बीच में ही अटक गए, जैसे किसी ने उन्हें अपनी गोद में ले लिया हो। केवल हाथ में थोड़ी चोट आई, सुरक्षित होकर आकर मुझसे मिले। उस माता के चरणों में हजार-हजार बार निछावर हूँ।

श्री बसन्ती लाल श्रीवास्तव, भितरवा (म.प्र.) से लिखते हैं—एक बार मैं अपने गाँव की एक पहाड़ी नदी में तैर रहा था। अकस्मात् गहरे पानी में चला गया और पानी के तेज बहाव में बहने लगा। यह देखकर मेरे साथ के अन्य युवक डरकर गाँव को भाग गए। इतने में ऊपर से पानी भी बरसने लगा। मैं १५ मिनट तक बहते-बहते एक ऐसे स्थान पर पहुँचा जहाँ नदी का पानी १७५ फीट ऊपर से नीचे की तरफ बड़े वेग से गिरता था। यह देखकर मेरे भीतर शून्यता छा गई और मेरी जबान बंद हो गई। मेरे मन में एकाएक यह भाव आया कि गायत्री माता

मेरे प्राण ले। मैं इतना ही संकल्प कर पाया कि ठीक उसी जगह जा पहुँचा जहाँ से नदी नीचे गिरती थी। आधी मिनट में ही मेरी यह संसार यात्रा समाप्त होने वाली थी, पर अचानक मैं एक बड़े पत्थर से टकराकर रुका जो पानी में एक हाथ डूबा हुआ था। वहाँ मैं बड़े आराम से बैठ गया। मैं नहीं कह सकता था कि मुझे किस प्रकार यह भान हुआ कि यहाँ चट्टान है और इससे मैं बच जाऊँगा। उस दिन से गायत्री माता का जप ही मेरे जीवन का प्रधान कार्य बना हुआ है।

श्री शेरसिंह जी प्रधानाध्यापक बेसिक स्कूल, कानाखजड़ी (अजमेर) से लिखते हैं—ता. १६-५-५५ को मैं अजमेर रोड पर दो मोटरों के बीच साइकिल समेत दब गया था, पर गायत्री माता की कृपा से मेरी प्राण रक्षा हो गई। वह घटना मुझे और मेरे अफसरों को अब भी याद है। इसी प्रकार ता. ९-१२-५६ को एक शेर ने दो अन्य आदमियों को चीर डाला। मैं भी बंदूक लेकर वहाँ गया, शेर को घायल कर दिया, पर वह जख्मी होकर भी मेरे ऊपर टूट पड़ा। शेर के दोनों अगले पंजे मेरे कंधों पर थे और मुँह गले पर। मैं जख्मी तो हो गया और मेरा गरम कोट शेर के पंजे से फट गया, पर गायत्री माता ने मेरी प्राण-रक्षा की। मेरे पीछे दो आदमी और खड़े थे वे भी भाग गए। उस समय का दृश्य सचमुच ही एक चमत्कार था।

श्री रामकुमार शर्मा, कनवास (कोटा) माता की रक्षा शक्ति के बारे में लिखते हैं—दीपावली के दूसरे दिन राजस्थान में बैल पूजा का उत्सव खूब धूमधाम से मनाया जाता है। इस उल्लास में पटाखे, बंदूक और गाड़ी में बाँधकर छोटी तोपें भी छोड़ी जाती हैं। मैं उस उत्सव में शामिल होने जा रहा था। एक जगह गाड़ी में बाँधे तोप में १०-१२ मुट्ठी बारूद भरकर उसमें बत्ती जलाई जा चुकी थी। बत्ती जलाने वाले आग लगाकर वहाँ से दूर हट गए थे। मैं तोप के करीब तीन हाथ फासले पर अनजाने में चला गया था—मुझे देखते ही मेरे परिचित हटने

की ध्वनि में चिल्ला उठे। तब तक तोप छूट गई और मुझे जोर का धक्का लगा। सिर घूम गया। दिल धड़-धड़ करने लगा। मैं बैठ गया पर माता की याद करना नहीं भूला। सभी मेरी रक्षा हो जाने पर आश्चर्यित थे। मुझे उस धक्के के सिवाय और कोई भी चोट नहीं पहुँची थी।

श्री राजवंश जी, मसौढ़ी (पटना) माता के वात्सल्य का वर्णन करते हैं—हमारे अनेकों संतान मरे हुए पैदा हुए और कुछ ने दुनिया को एक बार देखकर सदा के लिए आँखें बंद कर लीं। व्यथा से संतप्त हम सभी माता की प्रार्थना करते रहते थे। इस बार १७ फरवरी १९५६ के मध्याह्न में अस्पताल में मेरी धर्मपत्नी ने माता की कृपा से संरक्षित पुत्रत्न प्रसव किया। हम लोग उल्लसित हो उठे। अस्पताल से डिस्चार्ज होने पर चाची जी के साथ बच्चे सहित उसकी माँ गाड़ी पर घर जा रही थी कि एक दूसरी गाड़ी जोरों से टकरा गई। यह गाड़ी उलट कर टूट-फूट गई। मैंने समझ लिया यह बच्चा भी गया, पर माता ने गाड़ी उलटने के समय ही जच्चा-बच्चा सहित हमारी चाची को करीब ६ फीट दूर फेंक दिया। हलकी सी चोट लगी और सभी तरह से सुरक्षित ही रहे। गाड़ी से इतनी दूर फेंके जाने एवं सुरक्षा में हम साक्षात् माता की कृपा का दर्शन कर गद्गद हो रहे थे।

श्री कपिलदेव पांडेय, मिर्जापुर लिखते हैं—‘मेरे पड़ोस के श्री सदानंद जी सपत्नीक गायत्री उपासना करते हैं। एक दिन रात में उनके घर में चोर घुसा। उनके वस्त्रादि उठा ले गया। खड़खड़ सुनकर उनकी पत्नी की नींद टूट गई और उसने पति को जगाया। आवाज सुन चोर शीघ्रता से भाग गया। उन लोगों ने देखा—वस्त्र गायब थे। पुनः वे लोग सो गए। उनकी पत्नी को स्वप्न हुआ कि तुम्हारा वस्त्र चोर नहीं ले जा सका है। तुरंत लैम्प जलाकर खोजने से घर के पीछे सभी वस्त्र मिल गए।

श्री गोकुलचंद शर्मा, मोडक (कोटा) सपरिवार प्राण-रक्षा की कृपा के बारे में लिखते हैं—कृष्णाष्टमी की दूसरी रात में हम लोग पति, पत्नी एवं बच्चों सहित एक कत्तलपोश दीवार के नीचे सो रहे थे। अचानक दरवाजे का पत्थर टूट जाने से वह पत्थर और उसके ऊपर का कत्तल सभी एक साथ ही नीचे गिर पड़े, जिस पलंग और खाट पर हम लोग सोए थे वह चूर-चूर हो गए। हमारे ऊपर भी कत्तलों के ढेर थे, पर हम लोग बाल-बाल सुरक्षित थे। सभी लोग गायत्री माता की आश्चर्य भरी रक्षा की सराहना कर रहे थे। हम लोग बाहर निकल कर कृतज्ञता के आँसुओं से भर रहे थे।

श्री वेणीप्रसाद जी ट्रालीमैन, चिचौड़ा (बैतूल) गायत्री मंत्र की शक्ति के बारे में लिखते हैं—मैं एक दिन निमौटी गाँव जा रहा था। रास्ते में वर्धा नदी के किनारे साँप के डसने से एक गाय छटपटा रही थी। बहुत लोग अनेक उपचार कर रहे थे, पर कोई लाभ नजर नहीं आता था। मैं गायत्री जपता तो था, पर उसका प्रयोग कभी नहीं किया था। उस समय अंतर से प्रेरणा पाकर मैंने थोड़ा-सा जल मंगा कर गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित कर गाय को पिला दिया, शेष उसके शरीर पर छिड़क दिया। जल छिड़कते ही गाय एकदम उठकर खड़ी हो गई। फिर अभिमंत्रित जल पिलाने पर वह चरने लग गई। इस मंत्र शक्ति को देख मेरे सहित सभी लोग चकित हो रहे थे।

श्री कृष्णाराम हरिभाऊ घोंडे, वापी (गुजरात) से लिखते हैं—हम लोक वापी से ३० मील (लगभग ४८ किमी.) दूर घने जंगल में एक आवश्यक काम के लिए बैलगाड़ी में जा रहे थे। रात अँधेरी थी, जंगल बहुत घना था। इस सुनसान में डाकुओं ने हमें घेरा और गाड़ी रोक ली, हमारे पास कुछ धन भी था। बहुत घबराहट हुई। अंत में माता का नाम लेकर गाड़ी के बैलों को जोर से भगाया, उन कमजोर बैलों में न जाने कहाँ से इतनी ताकत आई कि इशारा देते ही घुड़दौड़ करने लगे।

डाकू बराबर दो मील तक पीछा करते रहे पर पकड़ न सके। अंत में पुलिस स्टेशन आ गया, वहाँ आकर हम लोगों ने शरण ली और जान बचाई। माता जिसकी रक्षा करती हैं उसे कौन मार सकता है ?

श्री दुर्गालाल जी रिटायर्ड मजिस्ट्रेट, बूँदी से लिखते हैं—गायत्री उपासना से मेरी अनेकों उलझनें दूर हुई हैं। पेंशन मिलने में बड़ी कठिनाइयाँ थीं वे हल हुईं। ज्येष्ठ पुत्र की आजीविका संबंधी समस्या सुलझी। कन्या के प्रसव काल में जो प्राणघातक संकट उपस्थित था वह टला। पौत्री की अत्यंत भयंकर ज्वर एवं मूर्च्छा से जीवन-रक्षा हुई। इस प्रकार मैंने अपने जीवन में गायत्री मंत्र के प्रयोग द्वारा अनेक चमत्कारी लाभ होते देखे हैं।

श्री विश्वनाथ पांडेय, दानापुर (पटना) लिखते हैं—मैं एक बार अपनी छोटी बहन के यहाँ आरा गया था। वहाँ उस पर प्रेत का आक्रमण हुआ करता था। उस दिन भी हुआ। उसकी सास ने कहा—बेटा! सुना है तुम गायत्री जपते हो, सो जरा अपनी बहन को जाकर देखो। मैंने गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित जल के छींटे मारे। वह झूमने लगी—कुछ देर बाद अपने होश में आ गई। शाम को फिर आक्रमण हुआ। तब मैंने अपने बड़े भाई को, जो निष्ठावान गायत्री उपासक हैं, बुला लाने के लिए एक आदमी को दानापुर भेजा। वे खबर मिलते ही यज्ञ भस्म लिए यथाशीघ्र आए। उनके आने पर वह आक्रमित दशा में थी। उन्होंने भस्म लगाकर अभिमंत्रित अक्षतों के छींटे मारे। अक्षत लगते ही वह मूर्च्छित हो गई। फिर होश में आ गई। उनके श्वसुर ने डॉक्टरों से हिस्टीरिया रोग कहकर बहुत इलाज कराए थे—पर कभी आराम नहीं हुआ। भाईजी के द्वारा आक्रमण दूर होने पर फिर कभी भूत लौटकर नहीं आया। अब वह पूरी स्वस्थ है।

श्री ब्रजगोपाल शर्मा, सवाँसा अपने जीवन में सुख-शांति पाने के विषय में लिखते हैं—मैं चारों ओर शत्रुओं से घिरा था। सभी मेरी बुराई

करने की ताक में रहते। मुझे जरा भी चैन नहीं था। प्रशंसा सुनकर ही मैं भी गायत्री तपोभूमि गया था। वहाँ से अनुष्ठान करके लौटने के बाद ही मेरे सारे दुश्मन ठंडे हो गए। मैं उसी प्राइमरी स्कूल के साधारण अध्यापक से अनायास प्रधानाध्यापक बना दिया गया। आज हम सभी तरह से सुखी हैं और दुश्मन के बदले दोस्तों से घिरे रहते हैं। ऐसी माता के चरणों पर हम सदा निछावर हैं।

श्री नर्मदाशंकर ब्रह्मचारी राजकोट से लिखते हैं—कुछ समय पहले मैं 'सीतालानु कालापड़' नामक काठियावाड़ के एक गाँव में गया था। वहाँ मेरे दो मित्र बल्लभदास और जमनादास नाम के रहते हैं। उन दोनों की स्त्रियों पर अमरेली के किसी पापी ब्राह्मण का आवेश होता था, जिससे घरभर को बड़ा कष्ट था। इसके लिए सैकड़ों उपाय कराए पर कोई फल न निकला। जमनादास की माता ने मुझे भी सब हाल सुनाया और विलाप करने लगी। मैंने उनको विश्वास दिलाया कि वेदमाता गायत्री के प्रयोग से सब प्रकार की बाधा दूर हो सकती है। तब मैंने उनको पंचाक्षर मंत्र का १०८ जप नित्य करने को बताया और अपने मन में संकल्प किया—मैं इसके निमित्त सवालक्ष जप का अनुष्ठान करूँगा और इस अवसर पर नमक, मिर्च, तेल आदि त्याग कर केवल सात्त्विक भोजन करूँगा। यह सब कहकर मैं तो दूसरे दिन की गाड़ी से राजकोट वापस आ गया। वहाँ जब उन स्त्रियों को भूत-बाधा हुई तो जमनादास ने गायत्री मंत्र पढ़कर पानी पिला दिया। वह भूत कहने लगा 'मैं जाता हूँ'—'मैं जाता हूँ।' तब से वे सब कुशल से रहने लगे।

कचनरा मंडी (पो. नवाबगंज, बरेली) से श्री विद्याराम गंगवार लिखते हैं—मैं ता. १५-७-५७ को फावड़ा लेकर अपने खेत पर बाँध बाँधने गया। एक बाँध बाँधकर दूसरी तरफ जा रहा था कि एक साँप ने पैर में डस लिया। मैंने उसे फावड़े के नीचे दबा दिया और ४ खेत की दूरी पर लाठी लेने गया। वहाँ से लौटा तो साँप को वहीं पाया और लाठी से मार दिया। इसके बाद गायत्री मंत्र से वहाँ चीरा दिया और मंत्र

पढ़कर बंद लगा दिया। उस समय मुझे ठीक होश नहीं था, पर शाम तक माता की दया से मैं बिलकुल चंगा हो गया।

दानापुर कैन्ट (पटना) के श्री त्रियुगी नारायण केसरी लिखते हैं—मेरे यहाँ एक जमींदार के लड़के को सदैव ही कभी-कभी एक प्रेत आकर परेशान करता था। कभी-कभी तो ऐसा प्रतीत होता था कि उसका जीवन भी खतरे में है। ऐसी दशा देखकर मुझे बड़ी दया आई। एक दिन अचानक ही यह घटना मेरे ही समक्ष हो गई। मैंने तत्काल ही गायत्री मंत्र अभिमंत्रित कर जल का छीटा मारा एवं थोड़ा-सा जल पिला भी दिया। अब यह प्रेत बाधा सदा के लिए दूर हो गई है।

शाहदरा (देहली) से श्री राधेश्याम गुप्ता लिखते हैं—अभी दो मास पहले मैं हनुमानजी के दर्शन करके वापस आ रहा था कि ट्रक से मेरी साइकिल की टक्कर हो गई। ट्रक का पहिया मेरे पैर पर से उतर गया। साइकिल टूट गई पर मुझको कतई चोट नहीं आई। यह गायत्री उपासना का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इसी प्रकार मेरे दस वर्ष से संतान नहीं होती थी, अब माता की उपासना और प्रार्थना करने से पुत्र उत्पन्न हुआ। गायत्री जप द्वारा मैंने कितने ही लोगों के बुरे व्यसन छुड़ा दिए।

श्री हरगोविन्द त्रिपाठी बीसापुर (सुल्तानपुर) से लिखते हैं—मैं लगातार ३ वर्ष से माता की उपासना कर रहा हूँ। बैसाख सुदी पंचमी सं. २०१४ को माताजी का दिन था। हवन के बाद रात्रि में चालीसा का पाठ व रामचरितमानस पर प्रवचन हुआ। घर के सभी व्यक्ति हवन-स्थल में ही थे कि घर में चोरों ने सेंध लगाना शुरू किया। हवन से आकर हम सब लोग सो गए और उधर चोरों ने सेंध पूरी करके भीतर घुसने की तैयारी की। उसी समय मेरी माताजी की नींद टूट गई और चोर भाग गए। यह सब गायत्री माता के प्रभाव से ही हो सका, यह हम सबका विश्वास है।

श्री रतनसिंह गोहेल, मिठापुर (सौराष्ट्र) से लिखते हैं—गतवर्ष मेरे एक मित्र की मृत्यु मोटर दुर्घटना से हो गई थी। मुझे अनुभव हुआ कि उनकी आत्मा अशांत है और गायत्री उपासना का पुण्य फल चाहती है। मैंने उस आत्मा की शांति और सद्गति के लिए जप आरंभ किया। बहुत दिन बाद फिर उस आत्मा का प्रत्यक्ष हुआ तो उसने बताया कि उस गायत्री जप से उसे पूर्ण शांति मिली है। उसकी एक कामना-वासना जो और शेष थी उसे पूर्ण करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। गायत्री माता जीवित और मृत सभी को शांति देती हैं।

श्री ब्रजबल्लभ जी, दिगौड़ा से लिखते हैं—इस बार जब हमारे गाँव की फसल तैयार हो चुकी थी तभी ऐसे काले बादल उठे कि हम सब का हृदय काँप उठा। क्योंकि ऐसे समय ओला पड़ने की पूरी आशंका रहती है। उस समय हम सब सत्संग में बैठे थे। हमने वहीं माता से प्रार्थना की कि 'रक्षा करो'। माता ने प्रार्थना सुन ली और थोड़ा-सा पानी और जरा-से ओले गिरकर आकाश खुल गया। माता कृपा न करती तो सैकड़ों किसानों का सर्वनाश हो जाता।

श्री हरदयालु जी श्रीवास्तव, गोहाँड (हमीरपुर) माता की दयालुता का वर्णन करते हुए कहते हैं—मेरा ज्येष्ठ पुत्र घर से बैरागी बनकर चुपचाप निकल गया। १५ महीने उसकी खोज करते बीत गए—कहीं पता न चला। सब तरफ से निराश होकर मैंने एकमात्र गायत्री माता का आँचल पकड़ लिया। सोलहवें मास में अचानक ही उसका पूरा पता हमें मिला। पता मिलते ही हम कुछ सज्जनों के साथ वहाँ गए। उसने लौटना स्वीकार कर लिया। गेरुवा वस्त्र छोड़कर गृहस्थ के रूप में हमारे साथ आकर रहने लगा। हमारे प्रयत्न और आशा से अधिक सफलता मिलने का कारण एक मात्र माता की ही कृपा है।

श्री जगदीश प्रसाद भट्ट अध्यापक (पाला, मैहर बुंदेलखंड) से लिखते हैं—मई १९५७ में मुझे रक्त-पित्त रोग का बड़े जोरों से दौरा

हुआ। रक्त-स्राव अधिक मात्रा में होने से मैं एकदम निर्बल हो गया। मेरी दशा देखकर घर के सब लोग घबराने लगे। पर मैंने उनको धीरज बँधाया और गायत्री उपासना करने को कहा। इस पर सब बच्चे और स्त्री गायत्री जप करने लगे। माता की कृपा से एक सप्ताह के भीतर ही मेरा रोग पूर्णतया शांत होकर इस संकट से छुटकारा मिला।

पं. नत्थूलाल जी, निगोही (शाहजहाँपुर) से लिखते हैं—ता. ९ सितंबर को ग्राम महमदपुर (जि. पीलीभीत) के पंडित सुखलाल को एक भयानक सर्प ने टाँग में काट लिया। लोगों ने केवल गायत्री मंत्र पढ़कर बंद लगा दिए और इसी से झाड़ू-फूँक भी की। सुखलाल पहले तो बेहोश हो गया, पर तीसरे दिन गायत्री के प्रभाव से ही बिलकुल स्वस्थ हो गया। जो कोई चाहे महमदपुर के किसी भी व्यक्ति से इस घटना की सचाई की जाँच कर सकते हैं।

श्री जगतराम पस्तोर, टीकमगढ़ (म.प्र.) से लिखते हैं—मेरी पाठशाला के समीप एक ट्रक ड्राइवर गिट्टी डालते थे, उनसे परिचय हो गया। एक दिन वे टीकमगढ़ वापस जा रहे थे कि मुझसे रास्ते में भेंट हो गई। ट्रक को ठहराकर वे कहने लगे कि चलो, टीकमगढ़ चलते हो। मैं आंतरिक इच्छा न होते हुए ट्रक में बैठ गया। ट्रक के पिछले भाग में १६ बेलदार थे और मेरी बगल में सामने की सीट पर ट्रक मालिक के एक रिश्तेदार थे। ड्राइवर नशे में था और उसने कई बार ट्रक को गलत चलाने के बाद अंत में एक बिजली के खंभे से टकरा ही दिया। जिस समय ट्रक टकराया मैंने माता से रक्षा की प्रार्थना की और आश्चर्य है कि ट्रक में सवार १९ व्यक्तियों में मैं ही ऐसा था जिसके जरा भी चोट नहीं आई थी।

हाँसलपुर गाँव से भूतपूर्व जेल वार्डर श्री पंचमसिंह जी लिखते हैं—डोल-ग्यारस के अवसर पर रात के समय ग्राम-निवासी 'रुक्मिणी-हरण' नाटक कर रहे थे। वहाँ कुएँ के चबूतरे पर बैठकर ७-८ वर्ष

की एक कन्या खेल रही थी। वह अचानक कुएँ में गिर गई। आठ-दस मिनट बाद जब उसे ऊपर निकाला गया तो बेहोश थी। यह देखकर मैंने कहा—“हे वेदमाता! यह कन्या होश में आ जाए तो तेरी १०० माला फेरूँगा।” थोड़ी ही देर में उसे होश हो गया और सब लोग वेदमाता की जय-जयकार करने लगे।

चाँपा (बिलासपुर) से वैद्य पुनीराम जी लिखते हैं—एक सज्जन, जो जाति के सुनार हैं, प्रेत बाधा के कारण बड़ा दुःख पा रहे थे। भूत सब चीजों को अस्त-व्यस्त कर देता था, जिससे अनेक बार पति-पत्नी में लड़ाई भी हो जाती थी। उन्होंने किसी से गायत्री मंत्र का चमत्कारिक गुण सुनकर स्वयं ही जैसे बना तैसे ही गायत्री उपासना आरंभ कर दी और एक दिन रात के सात बजे हजार आहुति का हवन करने भी बैठ गए। जिस समय रात के १२ बजे तो सफेद साड़ी पहने एक काली-सी स्त्री खिड़की के पास प्रकट हुई और बोली—“मैं जाती हूँ, मुझे स्थान बतलाओ, अब मैं यहाँ एक पल भर नहीं ठहर सकती।” पर वे हवन करते ही रहे और नतीजा यह हुआ कि घंटे भर बाद वह प्रेत-छाया अदृश्य हो गई। तब से उस घर में शांति है।

श्री कन्हेदी लाल यादव (सागर) लिखते हैं—मेरी माता के गले में कैंसर हो गया था। तकलीफ के कारण वे छटपटाती थीं। सिविल सर्जन और अन्य डॉक्टर रोग को असाध्य बतला चुके थे। लोगों ने दूसरे बड़े शहर में जाकर इलाज कराने की सलाह दी। पर मैंने कहीं न जाकर गायत्री माता की शरण ली और इसके लिए सवालक्ष का पुरश्चरण किया। माता की कृपा से वह भयंकर रोग शीघ्र ही अच्छा हो गया।

श्री रामअवतार शर्मा, हस्वा से लिखते हैं—मेरे एक संबंधी पर मुकदमा चल रहा था। विरोधी पक्ष के सबूत बहुत ही प्रबल हो रहे थे। सबों का विश्वास था कि अब यह फाँसी से किसी भाँति बच नहीं

सकता। स्वयं मेरा भी यही विश्वास था। नजदीक के संबंधी होने के कारण मुझे भी उनके प्रति बड़ी ममता थी। हमने इस सम्मुख प्राप्त मृत्यु से बचने के लिए एक मात्र गायत्री माता की शरण लेना सर्वोपयुक्त समझा और उसी की उपासना में जुट गए। सभी को आश्चर्य है कि अपने पक्ष के प्रमाण कमजोर होते हुए भी कैसे माता ने उसे बचा लिया!

श्री मदनलाल जी, पोस्टमैन, अटरू (कोटा) माता के प्रेम का वर्णन करते हैं—मेरी जमीन का कुछ हिस्सा दूसरे व्यक्ति के यहाँ रहन था। मैं छह वर्ष से प्रयत्न करता आ रहा था कि वह जमीन छोड़ दे और अपने रहन की रकम ले ले, पर वह किसी भाँति राजी नहीं हुआ। माता की प्रेरणा से मैंने उसके ऊपर मुकदमा चलाया। दो ही पेशी बाद उस व्यक्ति ने मुझसे समझौता कर लिया और जमीन के साथ रहन की रकम भी छोड़ दी। इसमें भय-द्वेष नहीं था, स्नेह भरे चित्त से ही उसने इस बर्ताव को पूरा किया।

[और भी हजारों व्यक्ति ऐसे मौजूद हैं जो गायत्री की शक्ति का ऐसा ही अनुभव कर चुके हैं। इनमें अविश्वास की कोई बात नहीं है। भगवान सदैव अपने भक्तों की रक्षा करते हैं और निष्पाप व्यक्तियों को दैवी सहायता मिला करती है। गायत्री-साधना द्वारा मनुष्य के पापों और विकारों का नाश बहुत शीघ्रता से होता है और वह दैवी शक्तियों का कृपापात्र बन जाता है।]



हमारा युग निर्माण सत्संकल्प

- ◇ हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।
- ◇ शरीर को भगवान का मंदिर समझकर आत्मसंयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।
- ◇ मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।
- ◇ इंद्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम और विचार संयम का सतत अभ्यास करेंगे।
- ◇ अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।
- ◇ मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।
- ◇ समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।
- ◇ चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।
- ◇ अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।
- ◇ मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।
- ◇ दूसरों के साथ वह व्यवहार नहीं करेंगे, जो हमें अपने लिए पसंद नहीं।
- ◇ नर-नारी के प्रति परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।
- ◇ संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।
- ◇ परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।
- ◇ सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।
- ◇ राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रांत, संप्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।
- ◇ मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है—इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनाएँगे, तो युग अवश्य बदलेगा।
- ◇ 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा', 'हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा' इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

